ARYAN | Page No. | Date / /

जॉन हेनरिक पेस्टेलॉजी
John Henrick Pestalozzi

परिचय :- पेस्टेलॉजी स्विस (Swiss) शिक्षाविद् था, जिसने शिक्षा में मनोवैज्ञानिक प्रवृत्ति को बढ़ावा दिया। कुछ विद्वानों के विचार में उसने शिक्षा को मनोवैज्ञानिक बनाया अथवा शिक्षा का मनोवैज्ञानीकरण किया। सन् 1798 में सरकार ने स्टैन्ज (Stanz) में शिक्षा का प्रयोग करने के लिए उसे एक विद्यालय में नियुक्त किया, यहाँ उसने ज्ञानेन्द्रिय 'प्रशिक्षण' और 'करके सीखने' पर बल दिया।

पेस्टेलॉजी का शिक्षण क्षेत्र में योगदान

शिक्षा का अर्थ :- पेस्टेलॉजी ने शिक्षा को सम्पूर्ण मनुष्य के विकास की क्रिया माना। उसने उसे मनुष्य की जन्मजात शक्तियों के स्वाभाविक सामंजस्यपूर्ण एवं क्रमिक विकास की संज्ञा दी। स्वाभाविक विकास के संबंध में उसने कहा, "मनुष्य वृक्ष के समान है, जिस प्रकार वृक्ष पर्यावरण से पोषण

सामग्री लेकर स्वतः बढ़ता है, उसी प्र
बालक की छिपी शक्तियाँ जीवन में
विकसित होती हैं। शिक्षक को पर्यावरण
प्रस्तुत करने में माली को काम करना
चाहिए।

शिक्षा में मनोवैज्ञानिक प्रवृत्ति :-

(i) पेस्टेलोजी ने शिक्षा का मनोवैज्ञानीकरण किय
प्रचलित स्कूल के वातावरण तथा स्कूलों
को कृत्रिम गला घोंटने वाली मशीनें बताया
उसने बालक के अनुभव, पर्यवेक्षण और
स्वतंत्रता पर बड़ा बल दिया था।

(ii) उसने कहा कि इन अनुभवों में भी क्रमशः सर
से कठिन की ओर चलना चाहिए।

(iii) शब्दों के पहले पदार्थ आने चाहिए जिससे
जिससे छात्र को मूर्त से सूक्ष्म विचार की
ओर अग्रसर किया जा सके।

(iv) उसने अवलोकन तथा इंद्रिय ज्ञान को शिक्ष
का आधार माना।

(v) उसने एक नये शब्द 'आन्शाउंग' का प्रयोग

किया था, जिसका अर्थ इंद्रिय अनुभव अथवा सीधा मूर्त अवलोकन है। इसका तात्पर्य पदार्थ के अवलोकन से बालक की बाह्य एवं आंतरिक इंद्रियों पर प्रभाव डालना था।

(vi) उसने बालक की क्रियाशीलता के आधार पर 'करके सीखने' पर बल दिया।

(vii) शिक्षण - अधिगम को वह मूलतः विश्लेषणात्मक (Analytic) रखना चाहता था और आगमन विधि का प्रयोग आवश्यक समझता था।

(viii) उसने संगठन और सह-संबंध (Co-relation) पर जोर देते हुए कहा कि मन और शरीर, ज्ञान और ज्ञान तथा स्कूल और ज्ञान में निकट का संबंध स्थापित किया जाए।

(ix) वह विद्यालय में भी 'परिवार भावना' चाहता था।

पेस्टेलॉजी तथा पाठ्यक्रम :- पेस्टेलॉजी ने पाठ्यक्रम में निम्न विषयों का समावेश किया -

(i) गणित :- गणित के शिक्षण के लिए पेस्टेलॉजी ने एक तालिका की रचना की जिसे वर्गों के रूप में खण्ड प्रस्तुत करके तथा उन्हें उदग्र (Vertically) तथा अनुप्रस्त (Horizontally) करके बालकों को सुगमतापूर्वक गणित की शिक्षा दी।

(ii) ड्राइंग :- लकड़ी जैसे पदार्थों के खण्डों को जोड़कर पूरा चित्र बनाना सिखाया।

(iii) ज्यामिति :- समकोण, न्यूनकोण व अधिक कोण आदि सिखाने के लिए कार्डबोर्ड के मॉडल प्रयोग में लाए।

(iv) प्रकृति निरीक्षण तथा भूगोल :- इन विषयों में पर्यवेक्षात्मक विधि अपनाई गई।

(v) संगीत :- संगीत का प्रशिक्षण भी रोचक ढंग से दिया गया।

(vi) धार्मिक तथा नैतिक शिक्षा :- धार्मिक तथा नैतिक शिक्षा का आधार ठोस उदाहरण थे। इसके माध्यम से उसने बालकों को उनके अन्तःकरण के

अस्तित्व से परिचित कराया।

(vii) व्यावसायिक शिक्षा :- पेस्टेलॉजी ने पाठ्यक्रम में व्यवसायिक विषयों पर बल दिया।

(viii) धार्मिक शिक्षा :- पाठ्यक्रम के अवलोकन से स्पष्ट है कि पेस्टेलॉजी ने स्कूलों में धार्मिक शिक्षा को बहुत महत्वपूर्ण स्थान दिया। उसके विचार में धार्मिक शिक्षा आध्यात्मिक विकास में बहुत योगदान देती है।

पेस्टेलॉजी का आनशांग (Anschaung) :-

पेस्टेलॉजी द्वारा प्रतिपादित 'आनशांग' के सिद्धान्त को शिक्षाविदों ने एक क्रांतीकारी सिद्धान्त माना है।

पेस्टेलॉजी उन गिने-चुने शिक्षाशास्त्रियों में से हैं, जिन्होंने अपने गहन अनुभव के आधार पर नये शिक्षण सिद्धान्तों तथा विधियों का सूत्रपात किया। पेस्टेलॉजी के सिद्धांतो तथा विधियों ने शिक्षा में एक प्रकार से क्रांती लायी। पेस्टेलॉजी ने तत्कालीन स्कूलों के वातावरण के बारे में लिखा है- हमारे स्कूल अवश्य ही गला घोंटने

वाली केवल कृत्रिम मशीनें हैं, जिनके द्वारा प्रकृति के दिए हुए सभी अनुभव व शक्तियों का विनाश होता है।"
'आनशांग' इसी के विरुद्ध एक क्रान्तिकारी कदम था।

'आनशांग' का अर्थ इन्द्रिय अनुभव (Sense Perception) अथवा सीधा सूक्ष्म अवलोकन है, इसका तात्पर्य पदार्थों के अवलोकन से बालक की बाह्य तथा आंतरिक इंद्रियों पर प्रभाव डालना है। ऐस्टेलोजी ने कहा कि जो ज्ञान खोजकर प्राप्त किया जाता है, वह बहुत लाभकारी होता है। आंतरिक विवेक का सिद्धान्त ज्ञान प्राप्त करने का प्रथम साधन है।

मस्तिष्क के विकास के तीन स्तर तथा 'आनशांग' (Three Levels of Mental Development and Anschung)

ऐस्टेलोजी की यह धारणा थी कि शिक्षा विधि प्रभावी हो सकती है, जो कि मस्तिष्क के विकास के अनुरूप हो। उसने मस्तिष्क के तीन स्पष्ट स्तरों की ओर ध्यान दिया जो है -

(i) प्रथम स्तर :- इस स्तर में इंद्रियों के माध्यम से पदार्थ के प्रतिरूप को ग्रहण करता है, परन्तु यह प्रतिरूप धुँधला तथा अस्पष्ट होता है।

(ii) दुसरा स्तर :- मस्तिष्क के विकास के दुसरे स्तर पर पदार्थ के ये प्रतिरूप एक दुसरे से भिन्न होने लगते है। इस स्तर पर तब यह प्रतिरूप एक ईकाई के रूप में स्पष्ट हो जाता है।

(iii) तीसरा स्तर :- मस्तिष्क के विकास के तीसरे स्तर पर पदार्थ का वास्तविक ज्ञान हो जाता है। सभी प्रतिरूप निश्चित प्रयत्नों में बदल जाते हैं।

अतः संक्षेप में ज्ञानशांगों का अभिप्राय छात्र द्वारा अपने स्वयं प्रयोग द्वारा प्राप्त करने से है। ज्ञान वही सार्थक है जो स्वयं के परिश्रम से प्राप्त किया जाए।

पेस्टेलॉजी के शिक्षा दर्शन का मूल्यांकन (Evaluation of Pestalozzi's Philosophy

1. पेस्टेलोजी ने शिक्षा का मनोवैज्ञानीकरण किया।

2. शिक्षा का अर्थ बालक की छिपी हुई शक्तियों का विकास करना है।

3. शिक्षण में पर्यवेक्षण विधि पर जोर दिया।

4. स्कूल को एक आदर्श घर की संज्ञा दी।

5. शिक्षा के जनतन्त्रीकरण पर बल दिया।

6. बालक को अनुशासित करने के लिए बाह्य नियंत्रण का सहारा न लिये जाने की बात कही गई है।

7. शिक्षण स्थूल पदार्थों की सहायता से किया जाए।

8. ओबजेक्ट/ऑनरचोड्ड सिद्धान्त प्रस्तुत किया। मूर्त से अमूर्त शिक्षा सिद्धान्त पर बल दिया।